दिनांक 19 मई दिन शुक्रवार, गोरखपुर । सायम्।

श्री गोरखनाथ मंदिर में मूर्ति प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर आयोजित सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान-यज्ञ के पंचम दिवस के अवसर पर कथा व्यास डॉ॰ श्यामसुन्दर पाराशर जी ने कहा कि नन्द बाबा के घर में मूर्तिमान आनन्द के रूप में ही भगवान् ने जन्म लिया। गोकुलवासियों ने नन्द बाबा को बधाईयां दी 'नंद के आनन्द भयो जय कन्हैया लाल की' । कन्हैया के जन्म के बाद नन्द बाबा मथुरा के राजा कंस को वार्षिक कर देने गए थे। उसी समय कंस ने पूतना को गोकुल भेजा, वह परम सुंदरी का रूप धारण कर नन्दलाला के पास पहुंचती है, तो भगवान अपने नेत्र बंद कर लिए क्योंकि भगवान उसको पहचान गए।

हमारे अंतःकरण को मलिन करने के लिए जो गंदभी जाती हैं, उसके दो ही रास्ते हैं आँख और कान। इन दोनों से हमारे अंतःकरण में जो गन्दगी प्रवेश होती है वही अंतःकरण को मलिन करती है। हमारे वेदों में कहा गया है कि कानों से भद्र सुनें, आंखों से भद्र ही देखें। भगवान की कथा को कान से सुनें और उनके स्वरूप को आंख से देखो तो हमारा अंतःकरण धीरे-धीरे शुद्ध हो जाता है।

नंदलाल उस राक्षसी को देखे नहीं, वह कान्हा को लेकर उड़ी और अपना स्तनपान कराने लगी, भगवान स्तनपान करते-करते उसका प्राण भी पी गए, पूतना धराशाई हो गई। यशोदा मैया लाला को पंचगव्य पान कराकर मंत्र पढ़ते हुए गाय की पूँछ से उनकी झाड़-फूंक करती है। जिन आठ मंत्रों से लाला को गाय की पूंछ से झाड़ती है, उसे ' बाल रक्षा कवच' कहा गया। उसके पाठ से बच्चों को झाड़ने से बच्चे निरोग हो जाते हैं।

"पलना में ललना झुलावे यशोदा मैया, पलना में ललना" इस बधाई गीत गाने के बाद उन्होंने शकटासुर और तृणावर्त के वध की कथा सुनाते हुए, कृष्ण की बाल लीला का वर्णन किया।

भगवान के नामकरण का वर्णन करते हुए बताये कि प्रसिद्ध ज्योतिषी गर्गाचार्य के द्वारा भगवान का नाम कृष्ण रखा गया। जो सब को अपनी ओर खींच

लेता है वो कृष्ण होता है। गर्गाचार्य ने उनका भविष्य बताते हुए कहा कि वह बहुत बड़े चोर होंगे, क्योंकि वो गोपियों के चित्त को और भक्तों के पाप को चुरा लेंगे, इसलिए इन्हें चोर कहा जाएगा। कन्हैया अपने मित्रों के साथ माखन चुराते हैं, क्योंकि भगवान भक्तवांछा कल्पद्रुम है, वो गोपियों की इच्छा जानते थे कि ये मुझे माखन खिलाना चाहती हैं, इसलिए खाते और खिलाते हैं। दूसरा कारण यह है कि वह अपने ग्वाल बालों को बलवान करके कंस के अत्याचार के विरुद्ध तैयार करने के लिए माखन चुराकर उन सबको खिलाते हैं।

"मनमोहन बिगड़ गए वारे से, यशोदा तेरे दुलारे से" इस गीत के द्वारा गोपियों के यशोदा मैया से शिकायत का मनोरम वर्णन किया।

' मैया तेरे लाला ने माटी खाई यशोदा तेरे लाला ने माटी खाई' इस गीत के द्वारा उन्होंने यशोदा मैया को कन्हैया के मुख में ब्रह्माण्ड दर्शन की कथा सुनाई।

यशोदा मैया के यहां अनेकों दासियां होने पर भी कन्हैया के लिए स्वयं दधि मंथन करती है, इससे शिक्षा मिलती है, सभी माताएं अपने बच्चों का स्वयं सेवा करें, आया के भरोसे ना छोड़े।

उन्होने कहा कि किसी भी कार्य की सफलता में भगवान की कृपा और पुरुषार्थ दोनों की आवश्यकता होती है। हमें जीवन में प्रबल पुरुषार्थ करना चाहिए, तभी भगवान भी हमारे ऊपर कृपा करेंगे।

उन्होंने अघासुर, बकासुर, वत्सासुर आदि के भगवान के द्वारा वध का वर्णन करते हुए बताया कि कार्तिक शुक्ल अष्टमी अर्थात् गोपाष्टमी को गाय चराना प्रारंभ किया। गाय चराते हुए एक दिन काली दह पहुंचे, वहां कालिया नाग के ऊपर नाग-नथैया करके कालिया मर्दन किया।

उन्होंने कालीनाग से भगवान के संवाद का वर्णन करते हुए कहा कि भगवान ने नाग पत्नियों की प्रार्थना पर उसको प्राण-दान कर कहते हैं कि या तो तुम विष वमन करना छोड़ दो या अपने रमण-द्विप चले जाओ। क्योंकि राष्ट्र द्रोही व्यक्ति या

तो राष्ट्र की संस्कृति के अनुरूप आचरण करें या तो देश छोड़कर चला जाए, तो इस प्रकार कालिया अपने द्विप चला गया।

कथाव्यास ने कहा कि ब्रह्मानंद भी जिसकी आवाज के सामने फीका पड़ जाए, उसे वेणु कहते हैं। उन्होंने वेणु की महिमा वेणुगीत के माध्यम से सुनाया।

कथा व्यास ने कहा कि गायों में सभी देवता रहते हैं, जो गायों को प्रसन्न कर लेता है, उससे सारे देवता प्रसन्न हो जाते हैं। ये पूरे विश्व की जननी हैं। भगवान गायों की रक्षा करने के लिए अवतार लेते हैं।

कथा का समापन आरती और प्रसाद वितरण से हुआ। संचालन डॉ॰ अरविंद चतुर्वेदी ने किया।

कथा में गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने कथा व्यास की आरती की साथ ही पूज्य राघवाचार्य जी महाराज, योगी कमलनाथ, महन्त मिथिलेशनाथ, योगी शिवनाथ, महन्त रवीन्द्रदास, महन्त सन्तोषदास सतुआबाबा, , महंत राममिलन दास, यजमान राजेश मोहन सरकार, प्रदीप जोशी, अवधेश सिंह आदि बड़ी संख्या में कथा प्रेमी उपास्थित रहे ।

कथा समाप्ति पर प्रसाद वितरण किया गया।